बीजयान

प्रलयों से– प्रकंपों से– प्रभंजनों से
अनवरत चलता "बीजयान"
सभ्यताओं का करे "बीजवपन"
नित नयी संस्कृतियों का समागमन!

आशाओं का हल धरे
आशयों के आलाप भरे
व्यग्रता और उग्रताओं की
राहों पर चलते – चलते ,
कभी ऊसरों में – कभी वादियों में
कभी क्यारियों में – कभी मेडियों में
कभी घाटियों में – कभी वाटियों में
अलग– अलग माटियों में
फूटे नवांकुर !
संस्कृतियों के धरोहर !

बीज बोकर अन्न दिये
अन्नदाता की आँखों में
हजारों दीपों की जगमगाहट
कलकल करती जलधाराओं के मंजीर नाद

लाखों वीणा वादनों की झंकार !
पेड–पंछी , टीले और झीलों के

मिलन से प्रकृति
मन– मस्तिष्क और मेधा का
सम्मिलन लाये संस्कृति ,
जो समझे कहलाये बृहस्पति!
हरितमा को साक्ष्य बना
सुरक्षित नये बीजों का खजाना
आगामी पीढियों के लिए महान नज़राना !
हरितमा की चाह – अंकुरों से नेह
संतुलन के प्रति मोह
पाल रही हर नई पीढी
बनती हरितहार की अगली कड़ी !
श्रमजल से सिंचित एक– एक बीज
"बीजाक्षर" बन
हर शाक "शाकंबरी" बन
बर्फ की थरथराहट में
भभकते रेगिस्तान में
कवच बन, निरंतर
रक्षा करता "अन्न सूक्त"!!
– – – – – – – – – –

संपर्क सूत्र

डॉ. सुमन लता रुद्रावझला